अरविन्दो

जीवन के प्रथम चरण में वे "क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी" थे।

- गरमपंथी – स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य
- नरमपंथी – प्रार्थना, याचना की नीति

अरविंदो ने जीवन के प्रथम चरण में भारत में उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा का समर्थन किया और गरमपंथी विचारधारा के दृढ़ समर्थक थे उनकी शिक्षा पूर्णतः पाश्चात्य पृष्ठभूमि में हुई परन्तु भारत आकर वे अत्यधिक धार्मिक और आध्यात्मिक हो गए, वे बंकिम चन्द्र के "आनन्दमठ" उपन्यास और कृष्णचरित्र से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने लन्दन में भी क्रान्तिकारी गतिविधि में भाग लिया और वे लन्दन में कमल कटार के सदस्य थे जो क्रान्तिकारी संगठन था। भारत आकर वे गुप्त समाज के सदस्य बन गए, जिसकी स्थापना पूणे में "ठाकुर साहब" ने की थी। अरविन्द का सम्बन्ध चापेकर बन्धुओं से भी था जो प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। उनके भाई "बारीन्द्र घोष" अनुशीलन समिति के सक्रिय कार्यकर्ता थे। अरविन्दो ने 1893-94 में "New Lamps for old" के नाम से लेखों में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष का आवाहन किया।

Scanned with CamScanner

उन्होंने आम व्यक्तियों में चेतना उत्पन्न किया विवेकानन्द की भाँति उन्होंने त्याग, इत्यादि शब्द और विरोध नहीं बल्कि इसकी व्याख्या स्वर्ग और विप्लव है।

उन्होंने उदारवादियों के इस बात का तीव्र विरोध किया कि पहले आम सुधार होने चाहिए। अरविन्द के अनुसार स्वराज सबसे महत्वपूर्ण है और स्वराज्य की प्राप्ति के पश्चात सुधार होगा। उन्होंने "No Compromise" नामक लेख में काँग्रेस की कड़ी आलोचना की। उनके अनुसार काँग्रेस का दृष्टिकोण निराशावादी एवं कमजोर है उनके अनुसार ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मुकाबला धर्म युद्ध है, उनके अनुसार जिन ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या हो रही है यह ईश्वर की इच्छानुसार ही हिंसा के विरुद्ध हिंसा औचित्यपूर्ण और आवश्यक है वे गीता से अत्यधिक प्रभावित थे। विवेकानन्द की शिष्या 'सिस्टर निवेदिता" से अरविन्द का कथन आते हैं कि जीवन मृत्यु काली माँ के "नृत्य" की तरह है। ∴ आततायियों का विनाश उचित है

Scanned with CamScanner

वे बंगाल के क्रान्तिकारी संगठन लोटस और डायमंड से भी जुड़े थे। उनके अनुसार राष्ट्रवाद धर्म है, यह भारत में ईश्वर की देन है, इसका निर्देशन ईश्वर स्वयं कर रहे हैं। भारत सदैव एक राष्ट्र रहा है लेकिन राज्य का निर्माण यहाँ नहीं हो सका। राष्ट्र एक व्यक्ति के शरीर की भाँति है। राष्ट्र एक मावनी या भौतिक जीवन है यह एक आत्मिक प्रकृति है, इसमें मन और शरीर का विकास हो रहा है।

विचार का वितीय धारणा –

बंगाल विभाजन के बाद उन्होंने स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा का समर्थन किया। बहिष्कार और स्वदेशी दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं उनके अनुसार बहिष्कार के दो मूल उद्देश्य हैं –

① भारत में ब्रिटिश शासन की शक्ति कमजोर करना क्योंकि ब्रिटिश शासन शोषण के कारण कायम है।

② भारतीय अर्थव्यवस्था को शक्तिशाली बनाना।

उनके अनुसार विदेशी सरकार की राजनैतिक गतिविधियों का उल्लंघन औचित्यपूर्ण है, इसमें भी बढ़कर है लोगों का अधिकार है उनके का राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक आध्यात्मिक एवं सैद्धान्तिक है। उनके राष्ट्रवादी चिन्तन को भिन्न रूप में व्यक्त किया जा सकता है –

① उनके अनुसार उनकी प्रतिभा ईश्वर की देन है इसलिए वे इसका प्रयोग अपने लाभ के लिए नहीं करेंगे।

② इनके अनुसार जीवन का लक्ष्य, ईश्वर की आराधना करना नहीं बल्कि ईश्वर का साक्षात प्राप्त करना है।

③ राष्ट्र भूमि का टुकड़ा नहीं अपितु यह माँ है और माँ को आततायियों से मुक्त करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

अरविन्द भारत में आध्यात्मिक विचारधारा के प्रतिनिधि विचारक हैं, इन्होंने धर्म और राजनीति को सदैव अविभाज्य माना। इनके अनुसार भारत का राष्ट्रवाद शाश्वत है जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त है, इसकी हत्या करना सम्भव नहीं है क्योंकि ईश्वर की हत्या नहीं की जा सकती अतः भारत से राष्ट्रवाद का विनाश नहीं किया जा सकता। स्वराज्य की प्राप्ति ईश्वर में विश्वास के द्वारा ही सम्भव है, इन्होंने बंगाल विभाजन को ईश्वर का आशीर्वाद माना। जिसके द्वारा लोगों में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति रोष उत्पन्न होगी।

Scanned with CamScanner

उन्होंने कहा कि - अब वह समय आ गया है जब खुला विद्रोह आवश्यक है, उन्होंने युगान्तर में लिखते हुए पूर्ण स्वराज्य का समर्थन किया और इसका महत्व निम्न रूपों में किया -

(A) एक पराजित देश अपनी शक्ति खो देता है

(B) विदेशी सरकार के अन्तर्गत स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।

(C) स्वशासन केवल व्यक्ति के विकास हेतु नहीं बल्कि राष्ट्र के विकास हेतु भी आवश्यक है।

उन्होंने नरमपंथियों की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि - याचना और प्रार्थना से स्वराज्य की प्राप्ति सम्भव नहीं और नारा दिया कि "स्वतंत्र नहीं तो ~~अधीन~~ सहयोग नहीं।"

<u>तीसरा चरण</u> -

— मानवीय एकता
— मानवीय धर्म
— अन्तर्राष्ट्रीयतावाद

अरविन्द जीवन के प्रथम चरण में पिस्तौल, बम की राजनीति के समर्थक थे बाद में उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार का समर्थन किया। जीवन के तीसरे चरण में आमूल-चूल परिवर्तन हो गया वे आध्यात्मिक महात्मा हो गए, उन्होंने राष्ट्रवाद को अन्तर्राष्ट्रीयता से समन्वित कर दिया उन्होंने मानवीय एकता के विचार का प्रचार किया।

Scanned with CamScanner

तीसरे स्तर में उन्होंने "Life Devine", "The Ideal of Human unity", "The Synthesis of Yoga" लिखी। 1910 के बाद वे महान योगी हो गए, उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया। उनके विषय में लिखते हुए "डाल रिचर्ड" ने कहा - "महान व्यक्तियों, महान घटनाओं के आने का समय आ गया है। इंग्लैण्ड में एक दैवीय व्यक्तित्व है जो नेता है कल का योद्धा है, एक हिन्दू है जिसका नाम है अरविन्द घोष।" अरविन्द के अनुसार मानव मस्तिष्क उच्चतम है लेकिन वो दैवीय चेतना से भिन्न ही ईश्वर सुपर मानव द्वारा मानव मस्तिष्क में चेतना देते हैं। उनके विचारों में व्यक्ति और समाज के [illegible] केन्द्र स्थान पाया जाता है, उनके अनुसार व्यक्ति महत्वपूर्ण है लेकिन व्यक्ति के विकास के लिए परिवार समुदाय और राष्ट्र आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्र को अत्यधिक महत्व देते हुए, उसकी भिन्न विशेषताओं का वर्णन किया - राष्ट्र का आधार आत्मिक एवं [illegible] होता है ~~व्यक्ति~~ राज्य का मूल आधार शक्ति है।

राज्य समाज और व्यक्ति के अन्तिम उद्देश्य अस्तित्व है। उनके अनुसार व्यक्तियों के उच्च आत्मिक एवं आध्यात्मिक स्तर से उनको पूर्णता प्राप्त होती जाती है। अतः उन्होंने राष्ट्रीय राज्य के निर्माण पर बल दिया। राष्ट्रीयतावादियों राष्ट्र राज्यों के स्थान ऐसे राज्य होगा जिसमें शोषण का अभाव होगा। उन्होंने मानवीय एकता तथा विश्वराज्य स्थापित करते हुए विश्व राज्य के निर्माण पर बल दिया, जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं :-

(A) मानव जाति का निर्माण आवश्यक है, जिससे लोग भौतिक भावनाओं से ऊपर उठ सकें।

(B) यह विश्व राज्य किसी जाति अथवा व्यक्ति की स्वतन्त्रता की आत्मा के साथ विश्वास है।

(C) आध्यात्मिक एकीकरण द्वारा व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठने की शिक्षा दी जायेगी। और इसके आधार पर समाज के निर्माण पर बल दिया जायेगा।

(D) उनके अनुसार विश्व में समस्त विभिन्न राष्ट्रों के लिए राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्वतन्त्रता आवश्यक ही है। सांस्कृतिक एकता आध्यात्मिक और आर्थिक होती है और आत्मा से ही आध्यात्मिक निर्भर होता है।

Scanned with CamScanner